Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-320-326

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत मैथिली बाल कथा संग्रहक समग्र साहित्यिक मूल्यांकन

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 320-326
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

RAUSHAN KUMAR JHA
Research Scholar, Maithili,
Babasaheb Bhimrao Ambedkar
Bihar University, Muzaffarpur.

Corresponding Author :

RAUSHAN KUMAR JHA
Research Scholar, Maithili,
Babasaheb Bhimrao Ambedkar
Bihar University, Muzaffarpur.

सार : मैथिली बाल कथा साहित्य भारतीय भाषासभक साहित्यिक परंपरा मे एक महत्वपूर्ण आ समृद्ध विधा रूपे स्थापित अछि। प्रस्तुत शोध आलेखक उद्देश्य साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत मैथिली बाल कथा संग्रहसभक समग्र साहित्यिक मूल्यांकन करब अछि। एहि अध्ययन मे "ई भेटल तँ की भेटल", "जकर नारी चतुर होई", "पिलपिल्हा गाछ", "खिस्सा सुनु बाउ", "ई फूलक गुलदस्ता", "उड़न छू", "अनार" आ "चुक्का" जेकाँ कथा संग्रहसभक आधार पर आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत कएल गेल अछि। एहि कथा सभ मे विषयवस्तु, भाषा-शैली, शिल्प, बाल मनोविज्ञान आ सामाजिक चेतनाक सशक्त अभिव्यक्ति देखबा मे अबैत अछि। अध्ययन सँ स्पष्ट होइत अछि जे साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत कथा संग्रह मैथिली बाल साहित्य क उच्च स्तर पर स्थापित करैत अछि।

भूमिका : साहित्य अकादेमी भारतक एक प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था अछि, जे विभिन्न भारतीय भाषासभ मे उत्कृष्ट साहित्यिक कृतिसभ केँ सम्मानित करैत अछि। मैथिली भाषा मे सेहो अनेक महत्वपूर्ण रचना एहि सम्मान सँ विभूषित भेल अछि। विशेष रूप सँ बाल साहित्यक क्षेत्र मे साहित्य अकादेमीक योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण अछि।

बाल साहित्य समाजक भविष्य निर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाबैत अछि। बालक अपन प्रारंभिक अवस्था मे जे किछु सीखैत अछि, ओहि क प्रभाव ओकर सम्पूर्ण जीवन पर पड़ैत अछि। एहि लेल आवश्यक अछि जे बाल साहित्य गुणवत्तापूर्ण हो, जे बालक केँ नैतिक, सामाजिक आ बौद्धिक विकास मे सहायक बनाबय।

साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत मैथिली बाल कथा संग्रहसभ एहि दृष्टि सँ अत्यंत महत्वपूर्ण अछि। एहि कथा सभ मे केवल साहित्यिक उत्कृष्टता नहि, बल्कि सामाजिक उपयोगिता सेहो विद्यमान अछि। तँए एहि कृतिसभक अध्ययन आवश्यक अछि।

मूल्यांकनक सैद्धांतिक आधार : कोनो साहित्यिक कृतिक मूल्यांकन

किछु निश्चित मापदंड पर आधारित होइत अछि। मैथिली बाल कथा संग्रहसभक मूल्यांकन लेल निम्न आधार महत्वपूर्ण अछि:
1. विषयवस्तु – कथा मे प्रस्तुत विचार, संदेश आ कथानक
2. भाषा-शैली – भाषा क सरलता, सरसता आ प्रभावशीलता
3. शिल्प आ संरचना – कथा क प्रस्तुति आ कलात्मकता
4. बाल मनोविज्ञान – बालकक मानसिकता क अभिव्यक्ति
5. सामाजिक आ सांस्कृतिक प्रभाव – समाज आ संस्कृति पर कथा क प्रभाव
एहि आधार पर हम चयनित कथा संग्रहसभक विश्लेषण करैत छी।

"ई भेटल तँ की भेटल" क विस्तृत साहित्यिक मूल्यांकन : "ई भेटल तँ की बेताल" मैथिली बाल साहित्यक एक महत्वपूर्ण कृति थिक। ई मूल रुप सँ प्राचीन लोककथा "बेताल पच्चीसी" पर आधारित अछि, जाहि मे राजा विक्रम आ बेतालक बीचक संवाद केँ बाल-उपयुक्त रुप मे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

1. कथाक स्वरुप आ संरचना : ई कथा-संग्रह श्रृंखलाबद्ध संरचना पर आधारित अछि। प्रत्येक कथा अपन आप मे स्वतंत्र अछि, मुदा सभ कथा एकटा मुख्य ढाँचा सँ जुड़ल अछि। प्रत्येक कथा क अंत मे एकटा जटिल प्रश्न उपस्थित होइत अछि, जकर उत्तर राजा विक्रम अपन न्यायप्रियता आ तर्कशक्ति क आधार पर दैत छथि।

2. बाल साहित्यक दृष्टिकोण सँ महत्व : एहि कथा-संग्रह क मुख्य विशेषता बालक मे जिज्ञासा आ तर्कशक्ति क विकास करब अछि। बेतालक प्रश्न बालक केँ सोचबाक लेल प्रेरित करैत अछि आ नीक-अधलाह (न्याय-अन्याय) क बीच अंतर बुझबा मे सहायक होइत अछि।

भाषा अत्यंत सरल आ सरस अछि, जाहि सँ बालक सहज रुप सँ कथा बुझि सकैत अछि। ई कृति मनोरंजन संग-संग नैतिक शिक्षा सेहो प्रदान करैत अछि।

3. सांस्कृतिक संदर्भ : एहि कथा मे मिथिला क सांस्कृतिक चेतना आ न्यायप्रधान परंपरा क स्पष्ट झलक देखबा मे अबैत अछि। ई बालक केँ अपन सांस्कृतिक विरासत सँ जोड़ैत अछि।

4. समग्र मूल्यांकन : ई कृति कथात्मक रोचकता, तर्कशक्ति आ नैतिकता क सुंदर समन्वय प्रस्तुत करैत अछि। बालकक बौद्धिक आ नैतिक विकास लेल ई अत्यंत उपयोगी अछि।

"जकर नारी चतुर होड़" क विश्लेषण : जकर नारी चतुर होइ" मैथिली बाल साहित्यक एक महत्वपूर्ण कथा अछि, जाहि मे नारीक बुद्धिमत्ता आ दूरदर्शिता क प्रभावी चित्रण कएल गेल अछि।

1. नारीक बुद्धिमत्ता आ व्यवहार कुशलता : एहि कथा क मुख्य केंद्र बिंदु ई अछि जे कोनो परिवार क उन्नति केवल पुरुष क प्रयास पर निर्भर नहि होइत अछि, बल्कि नारीक बुद्धि आ चतुराई सेहो महत्वपूर्ण भूमिका निभाबैत अछि। जकर घर मे नारी चतुर होइत छथि, ओ घर कठिन परिस्थिति मे सेहो सुरक्षित रहैत अछि।

2. लोकजीवनक यथार्थ चित्रण : एहि कथा मे मिथिला क ग्रामीण जीवन, सामाजिक संरचना आ पारिवारिक संबंध क सजीव चित्रण भेल अछि। बालक एहि माध्यम सँ समाजक वास्तविकता केँ बुझैत अछि आ नारीक सम्मान करबाक भावना विकसित करैत अछि।

3. समस्या समाधानक क्षमता : कथा मे देखायल गेल अछि जे जँ कखनो पुरुष हताश भ' जाइत छथि, तँए नारी अपन चतुराई सँ समस्या क समाधान क' दैत छथि। ई कथा नारी केँ केवल परिवार क सदस्य नहि, बल्कि संचालक रूप मे प्रस्तुत करैत अछि।

4. बाल साहित्यक उद्देश्य : एहि कथा सँ बालक सीखैत अछि जे धैर्य आ बुद्धि सँ कठिन परिस्थिति सँ बाहर निकलल जा सकैत अछि। परिवार मे नारीक परामर्श क महत्व सेहो स्पष्ट होइत अछि।

5. समग्र मूल्यांकन : ई कथा सामाजिक चेतना, नैतिक शिक्षा आ व्यवहारिक बुद्धिमत्ता क उत्कृष्ट उदाहरण थिक। मैथिली बाल साहित्य मे एकर विशेष स्थान अछि।

"पिलपिल्हा गाछ" क साहित्यक मूल्यांकन : "पिलपिलहा गाछ" मैथिली बाल कथा साहित्यक एक महत्वपूर्ण कृति थिक, जाहि मे प्रकृति, बाल मनोविज्ञान आ मानवीय संवेदनाक सुंदर समन्वय देखबा मे अबैत अछि। ई कथा बालक कैँ प्रकृति सँ जोड़बाक संग-संग ओकर भीतर संवेदनशीलता विकसित करैत अछि।

1. विषयवस्तु आ कथानक : एहि कथा क केंद्र एकटा "पिलपिलहा गाछ" अछि, जे कोमलता आ जीवनक प्रतीक रुप मे प्रस्तुत भेल अछि। लेखक प्रकृति क माध्यम सँ मानवीय भावना कैँ अभिव्यक्त करबाक प्रयास केने छथि।

कथा मे बालकक जिज्ञासा आ कल्पनाशीलता कैँ विशेष महत्व देल गेल अछि। बालक प्रकृति सँ जुड़ल प्रश्न करैत अछि आ ओहि के माध्यम सँ सीखैत अछि।

2. भाषा-शैली : मुरलीधर झा क भाषा अत्यंत सरल, सहज आ प्रवाहमयी अछि। लेखक ठेठ मैथिली शब्दावली क प्रयोग करैत छथि, जाहि सँ कथा मे आंचलिकता क सुगंध आबि जाइत अछि।

संवादात्मक शैली कथा कैँ जीवंत बनबैत अछि। पाठक कैँ एहन अनुभव होइत अछि जेना कोनो बुजुर्ग बालक सभ कैँ कथा सुना रहल छथि।

3. चारित्रिक विशेषता : एहि कथा मे मानवीकरण (मानवीय गुण आरोपण) क सुंदर प्रयोग भेल अछि। गाछ आ प्रकृति क अन्य तत्व कैँ मानवीय रूप देल गेल अछि, जाहि सँ बालक मे सहानुभूति आ दया क भावना विकसित होइत अछि। कथा अंत मे बिना प्रत्यक्ष उपदेश देलहुँ, नैतिक शिक्षा प्रदान करैत अछि। बालक धैर्य, प्रेम आ प्रकृति संरक्षण क महत्व बुझैत अछि।

4. मनोवैज्ञानिक पक्ष : लेखक बाल मनोविज्ञान कैँ गहराई सँ बुझैत छथि। "पिलपिलहा गाछ" क कोमलता बालकक कोमल मन संग मेल खाइत अछि। कथा मे संघर्ष आ समाधान बालकक मानसिक स्तर अनुसार प्रस्तुत कएल गेल अछि, जाहि सँ बालक कथा सँ भावनात्मक रुप सँ जुड़ि जाइत अछि।

5. समग्र मूल्यांकन : "पिलपिलहा गाछ" केवल एकटा कथा नहि, बल्कि मैथिली बाल साहित्य क एक महत्वपूर्ण धरोहर थिक। ई कृति सिद्ध करैत अछि जे लेखक बाल मनोविज्ञान क गहरे पारखी छथि आ प्रकृति आ जीवनक संबंध कैँ अत्यंत प्रभावी ढंग सँ प्रस्तुत करैत छथि।

"खिस्सा सुनु बाउ" क विस्तृत मूल्यांकन : "खिस्सा सुनु बाउ " मैथिली बाल कथा साहित्य मे एक महत्वपूर्ण संग्रह अछि, जाहि मे विविध कथा सभ संकलित अछि। एहि कथा सभ मे नैतिक शिक्षा, सामाजिक व्यवहार आ बाल मनोविज्ञान क सुंदर समन्वय देखबा मे अबैत अछि।

1. उद्देश्य आ विषयवस्तु : एहि कथा-संग्रह क मुख्य उद्देश्य बालकक चारित्रिक विकास आ नैतिक शिक्षा प्रदान करब अछि। कथा सभ एहन ढंग सँ लिखल गेल अछि जे बालक सहज रुप सँ सही-गलत क अंतर बुझि सकय।

संगहि, कथा सभ मनोरंजन आ ज्ञान दूनू क संग ल' क' आगू बढ़ैत अछि। बालक कथा पढ़ैत-पढ़ैत जीवनक व्यवहारिक पक्ष सँ सेहो परिचित होइत अछि।

2. भाषा-शैली : एहि संग्रह मे मैथिली भाषाक मधुरता आ सरलता स्पष्ट रूप सँ देखबा मे अबैत अछि। लेखक ठेठ मैथिली शब्दावली क प्रयोग केने छथि, जाहि सँ कथा बालक लेल सहज आ बोधगम्य बनि गेल अछि।

संवादात्मक शैली एहि कृति क विशेषता अछि। "खिस्सा सुनु बाब" शीर्षक स्वयं संकेत करैत अछि जेना कोनो बुजुर्ग बालक कैँ संग बइठा क' कथा सुना रहल छथि।

3. सांस्कृतिक जुड़ाव : एहि कथा-संग्रह मे मिथिला क ग्रामीण जीवन, परंपरा आ सामाजिक परिवेश क सजीव चित्रण देखबा मे अबैत अछि। पात्र, घटना आ परिवेश सभ मिथिला क लोकजीवन सँ जुड़ल अछि। एहि सँ बालक अपन जड़

सँ जुड़ैत अछि आ लोक-संस्कृति प्रति रुचि विकसित करैत अछि। कथा सभ मे लोककथाक प्रभाव सेहो देखबा मे अबैत अछि, जे एकरा आओर समृद्ध बनबैत अछि।

4. लेखकक योगदान : प्रो. वैद्यनाथ झा केवल कथा-लेखक नहि, बल्कि मैथिली साहित्य क गंभीर विद्वान रहल छथि। हुनकर ई कृति मैथिली बाल साहित्य क क्षेत्र मे महत्वपूर्ण योगदान देलक अछि। एहि प्रकारक रचना मैथिली बाल साहित्य क कमी कैँ दूर करैत अछि आ एहि विधा कैँ सुदृढ़ बनबैत अछि।

5.समग्र मूल्यांकन : "खिस्सा सुनु बाउ" मैथिली बाल कथा साहित्य क एक महत्वपूर्ण संग्रह थिक, जाहि मे नैतिकता, सांस्कृतिक चेतना आ मनोरंजन क संतुलित समन्वय देखबा मे अबैत अछि। ई कृति बालकक सर्वांगीण विकास लेल अत्यंत उपयोगी सिद्ध होइत अछि।

"ई फूलक गुलदस्ता" क विश्लेषण : "ई फूलक गुलदस्ता" शीर्षक स्वयं संकेत करैत अछि जे ई विविधता सँ भरल कथा-संग्रह अछि। एहि मे विभिन्न प्रकार क कथा सभ समाहित अछि, जे बालक कैँ अलग-अलग अनुभव प्रदान करैत अछि।

1. विषयवस्तु आ संरचना : एहि कथा-संग्रह क संरचना विविधतापूर्ण अछि। प्रत्येक कथा स्वतंत्र अछि, मुदा सभ कथा बाल जीवन सँ जुड़ल अनुभव आ शिक्षा प्रस्तुत करैत अछि। ऋषि बशिष्ठ कथा सभ मे बाल मनोविज्ञान कैँ केंद्र मे रखने छथि। बच्चा सभक जिज्ञासा, खेल-कूद, कल्पनाशीलता आ मानसिक विकास कैँ कथा माध्यम सँ प्रभावी ढंग सँ प्रस्तुत कएल गेल अछि।

2. भाषा-शैली : एहि पोथी मे सरल, सहज आ सुबोध मैथिली भाषाक प्रयोग कएल गेल अछि। भाषा एहन अछि जे बालक आसानी सँ कथा कैँ बुझि सकैत अछि। स्थानीय रंग एहि कृति क विशेषता अछि। मिथिलाक लोक जीवन, गाम-घरक परिवेश आ ठेठ मैथिली शब्दावलीक सुंदर प्रयोग कथा सभ कैँ जीवंत बनबैत अछि।

3. नैतिक आ शैक्षणिक महत्व : एहि कथा-संग्रह क मुख्य उद्देश्य बालक मे सकारात्मक मूल्य विकसित करब अछि। कथा सभ बालक कैँ नैतिकता, ईमानदारी आ संस्कारक शिक्षा दैत अछि।

संगहि, ई कृति मैथिली बाल साहित्य मे महत्वपूर्ण योगदान देत अछि। ई बच्चा सभ कैँ अपन मातृभाषा मे पढ़बाक रुचि जगबैत अछि, जे भाषा संरक्षण लेल अत्यंत आवश्यक अछि।

4. समग्र मूल्यांकन : "फूलक गुलदस्ता" मैथिली बाल कथा साहित्य क एक समृद्ध संग्रह थिक, जाहि मे विविधता, नैतिकता आ बाल मनोविज्ञान क सुंदर समन्वय देखबा मे अबैत अछि। ई कृति बालकक मानसिक आ सांस्कृतिक विकास लेल अत्यंत उपयोगी अछि। एहि संग्रह क विषयवस्तु बहुआयामी अछि। किछु कथा मे नैतिक शिक्षा अछि, त किछु मे सामाजिक चेतना, तँ किछु मे कल्पनाशीलता क सुंदर चित्रण देखबा मे अबैत अछि। भाषा अत्यंत मधुर आ प्रभावी अछि। लेखक सरल शब्दावली क प्रयोग करैत छथि, मुदा अभिव्यक्ति मे गहराई विद्यमान अछि। एहि कथा-संग्रह मे बाल मनोविज्ञान क सूक्ष्म चित्रण विशेष रुप सँ उल्लेखनीय अछि। बालकक भाव, जिज्ञासा आ कल्पना क अभिव्यक्ति कथा सभ कैँ प्रभावशाली बनबैत अछि।

"उड़न छू" क विस्तृत विश्लेषण : "उड़न छू" मैथिली बाल कथा साहित्यक एक महत्वपूर्ण संग्रह थिक, जाहि मे आधुनिक दृष्टिकोण, वैज्ञानिक चेतना आ सामाजिक जागरुकता क सुंदर समन्वय देखबा मे अबैत अछि। ई कृति बालक कैँ परंपरा आ प्रगतिशील सोच दूनू संग जोड़बाक प्रयास करैत अछि।

1. विषयवस्तु आ उद्देश्य : एहि कथा-संग्रह क विषयवस्तु अत्यंत सार्थक अछि। कथा सभ बालक कैँ परंपरा प्रति सम्मान राखैत हुए आधुनिकता कैँ अपनाबय लेल प्रेरित करैत अछि। एहि कृति क मुख्य उद्देश्य शिक्षा आ वैज्ञानिक चेतना क प्रसार करब अछि। बालक कैँ सोचबाक, प्रश्न करबाक आ तर्क विकसित करबाक प्रेरणा देल जाइत अछि।

2. पर्यावरण आ सामाजिक चेतना : एहि कथा-संग्रह मे प्रकृति, पशु-पक्षी आ पर्यावरण प्रति जिम्मेदारी क भावना

विकसित करबाक प्रयास कएल गेल अछि। बालक अपन परिवेश कैँ बुझैत अछि आ ओकर संरक्षण क महत्व समझैत अछि। एहि प्रकार कथा सभ बालक कैँ केवल ज्ञान नहि, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी सेहो सिखबैत अछि।

3. भाषा आ शैली : डॉ. झा एहि कथा सभ कैँ अत्यंत सरल, सहज आ बोधगम्य मैथिली मे प्रस्तुत केने छथि। भाषा एहन अछि जे बालक आसानी सँ कथा संग जुड़ि सकैत अछि। सरलता क कारण कथा सभ बालक लेल रोचक आ प्रभावी बनि जाइत अछि।

4. मातृभाषा प्रति अनुराग : एहि कृति बालक मे अपन मातृभाषा मैथिली प्रति प्रेम उत्पन्न करैत अछि। बालक अपन भाषा मे पढ़बाक माध्यम सँ आत्मीयता अनुभव करैत अछि।

5. समग्र मूल्यांकन : "उड़न छू" मैथिली बाल कथा साहित्य क एक आधुनिक आ उपयोगी संग्रह थिक, जाहि मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण, पर्यावरण चेतना आ भाषिक सरसता क सुंदर समन्वय देखबा मे अबैत अछि। ई कृति बालक कैँ जागरुक, जिज्ञासु आ संवेदनशील बनाबय मे सहायक अछि। एहि मे आधुनिक जीवन, विज्ञान, कल्पनाशीलता आ बालकक जिज्ञासा क सशक्त चित्रण भेल अछि। एहि संग्रह क कथा सभ मे बालक अपन परिवेश सँ प्रश्न करैत अछि, नव-नव बात जानबाक प्रयास करैत अछि आ कल्पना क माध्यम सँ अपन संसार के विस्तार दैत अछि। भाषा-शैली अत्यंत रोचक अछि। कथा मे गति अछि, जे बालकक रुचि बनौने रखैत अछि। एहि कथा-संग्रह मे आधुनिकता आ परंपरा क संतुलन देखबा मे अबैत अछि, जे एकर विशेषता अछि।

"अनार" क विश्लेषण : "अनार" मैथिली बाल कथा साहित्यक एक महत्वपूर्ण रचना थिक, जाहि क रचना पं. नारायण झा द्वारा कएल गेल अछि। ई कथा अपन रोचकता आ शिक्षाप्रद संदेश लेल विशेष रुप सँ प्रसिद्ध अछि। बालक लेल ई कथा प्रकृति, जीवनचक्र आ जिज्ञासा कैँ सरल रुप मे प्रस्तुत करैत अछि।

1. कथाक सारांश आ विषयवस्तु : एहि कथा मे एकटा अनार क दाना क माध्यम सँ बाल मनक जिज्ञासा कैँ चित्रित कएल गेल अछि। कथा प्रकृति, फलक महत्व आ जीवनक चक्र कैँ अत्यंत सहज ढंग सँ बुझबैत अछि। लेखक अपन विशिष्ट मैथिली शैली मे बालक लेल एहन संसारक निर्माण केने छथि, जतय सीख आ मनोरंजन दूनू संग-संग चलैत अछि।

2. प्रमुख विशेषता सभ :

(क) सरल भाषा-शैली : एहि कथा मे मैथिली क सरल, सहज आ बोधगम्य रुपक प्रयोग कएल गेल अछि। भाषा एहन अछि जे बालक आसानी सँ कथा कैँ बुझि सकैत अछि।

(ख) शिक्षाप्रद स्वरुप : ई कथा मनोरंजन संग-संग शिक्षा सेहो प्रदान करैत अछि। बालक कैँ प्रकृति आ वनस्पति प्रति जागरुक बनाबय मे ई कथा सहायक अछि।

(ग) कल्पनाशक्ति क विकास : कथाक घटनाक्रम आ पात्र बालक मे कल्पनाशक्ति आ तर्क क्षमता विकसित करैत अछि। बालक कथा संग जुड़ि क' सोचबाक प्रवृत्ति विकसित करैत अछि।

3. लेखकक योगदान : पं. नारायण झा मैथिली बाल साहित्य मे महत्वपूर्ण स्थान रखैत छथि। हुनक लेखनक विशेषता ई अछि जे ओ कथा कैँ केवल मनोरंजन धरि सीमित नहि रखैत छथि, बल्कि ओकरा शिक्षण क प्रभावी माध्यम बना दैत छथि।

"अनार" जेकाँ कथा एहि बात क उदाहरण थिक, जतय बालक कैँ ज्ञान आ मूल्य दूनू प्रदान कएल जाइत अछि।

4. सांस्कृतिक आ सामाजिक पक्ष : एहि कथा मे मिथिला क सांस्कृतिक तत्व स्पष्ट रुप सँ देखबा मे अबैत अछि। प्रयुक्त भाषा, मुहावरा आ शैली मैथिली संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैत अछि। संगहि, कथा बालक कैँ सादगी, सत्य आ प्रकृति संग जुड़ाव क शिक्षा दैत अछि।

5. समग्र मूल्यांकन : "अनार" मैथिली बाल कथा साहित्य क एक महत्वपूर्ण आ उपयोगी रचना थिक, जाहि मे शिक्षा,

कल्पना आ सांस्कृतिक चेतना क सुंदर समन्वय देखबा मे अबैत अछि। ई कथा बालकक बौद्धिक आ नैतिक विकास लेल अत्यंत उपयोगी अछि।

"अनार" मैथिली बाल कथा साहित्य मे एक महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। एहि कथा-संग्रह मे बालकक संवेदना, सामाजिक संबंध आ नैतिक मूल्यक प्रभावी चित्रण भेल अछि। विषयवस्तु क दृष्टि सँ कथा सभ अत्यंत सार्थक अछि। बालकक जीवन सँ जुड़ल प्रसंग कथा कैँ वास्तविक बनबैत अछि। भाषा सरल अछि, मुदा प्रभावशाली अछि। लेखक कम शब्द मे अधिक बात कहबामे सक्षम छथि। एहि संग्रह मे बाल मनोविज्ञान क गहराई सँ प्रस्तुति देखबा मे अबैत अछि, जे एकर विशेषता अछि।

"चुक्का" क साहित्यक मूल्यांकन : "चुक्का" मैथिली बाल कथा साहित्यक एक महत्वपूर्ण संग्रह थिक, जाहि क रचना मुन्नी कामत द्वारा कएल गेल अछि। ई कृति बाल मनोविज्ञान, ग्रामीण जीवन आ नैतिक चेतनाक सुंदर समन्वय प्रस्तुत करैत अछि।

1. कथाक स्वरूप आ शैली : एहि कथा-संग्रह मे बाल मनोविज्ञान कैँ केंद्र मे राखि क' लेखन कएल गेल अछि। छोट बच्चा सभक सहज जिज्ञासा, कोमल भावना आ मानसिक संसार कैँ अत्यंत प्रभावी ढंग सँ प्रस्तुत कएल गेल अछि। मुन्नी कामत सरल आ ठेठ मैथिली भाषाक प्रयोग करैत छथि, जाहि सँ बालक सहजता सँ कथा संग जुड़ि सकैत अछि। भाषा क सहजता एहि कृति क प्रमुख विशेषता अछि।

2. विषयवस्तु आ परिवेश : एहि कथा-संग्रह मे मिथिला क ग्रामीण परिवेश क सजीव चित्रण देखबा मे अबैत अछि। गाम-घर, माटि सँ जुड़ाव आ पारिवारिक संस्कार कथा सभ मे स्पष्ट रुप सँ प्रतिबिंबित अछि। लेखिका अपन अनुभवक आधार पर कथा सभ मे एहन परिवेश प्रस्तुत केने छथि, जे बालक कैँ अपन लोकजीवन सँ जोड़ैत अछि।

3. सामाजिक आ नैतिक संदेश : "चुक्का" बाल कथा होयबाक कारण मनोरंजन संग-संग नैतिक शिक्षा सेहो प्रदान करैत अछि। बालक कथा माध्यम सँ जीवनक मूलभूत मूल्य, संस्कार आ सामाजिक व्यवहार सीखैत अछि।

4. मैथिली बाल साहित्य मे योगदान : मैथिली मे बाल साहित्यक तुलनात्मक कमी रहल अछि। एहन स्थिति मे "चुक्का" जेकाँ कथा-संग्रह एहि रिक्तता कैँ भरबाक महत्वपूर्ण प्रयास थिक। मुन्नी कामत मैथिलीक सशक्त लेखिका छथि। हुनक रचना सभ मे सामाजिक संवेदना आ साहित्यिक परिपक्वता स्पष्ट देखबा मे अबैत अछि। ई कृति बाल साहित्य क्षेत्र मे हुनक महत्वपूर्ण योगदान कैँ स्थापित करैत अछि।

5. समग्र मूल्यांकन : "चुक्का" मैथिली बाल कथा साहित्य क एक महत्वपूर्ण आ प्रभावशाली संग्रह थिक, जाहि मे बाल मनोविज्ञान, सांस्कृतिक चेतना आ नैतिक मूल्यक सुंदर समन्वय देखबा मे अबैत अछि। ई कृति बालकक सर्वांगीण विकास लेल अत्यंत उपयोगी अछि।

आंशिक तुलनात्मक दृष्टि : उपरोक्त कथा-संग्रह सभक अध्ययन सँ स्पष्ट होइत अछि जे प्रत्येक संग्रह क अपन विशिष्टता अछि।

"ई भेटल तँ की भेटल" आ "जकर नारी चतुर होड़" जँहा परंपरागत मूल्य पर आधारित अछि, ओतहि "उड़न छू" आ "चुक्का" आधुनिक दृष्टिकोण कैँ प्रस्तुत करैत अछि।

"पिलपिला गाछ" पर्यावरण चेतना कैँ प्रमुखता दैत अछि, तँ "खिस्सा सुनु बाब" नैतिक शिक्षा कैँ। "फूलक गुलदस्ता" विविधता क प्रतीक अछि, आ "अनार" संवेदनशीलता क। एहि प्रकार सभ कथा-संग्रह मिलि क' मैथिली बाल साहित्य कैँ बहुआयामी बनबैत अछि।

प्रवृत्तिक समग्र विश्लेषण : मैथिली बाल कथा साहित्य, विशेष रुप सँ साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत कथा-संग्रह सभक अध्ययन सँ किछु प्रमुख प्रवृत्ति स्पष्ट रुप सँ सामने अबैत अछि। ई प्रवृत्ति केवल साहित्यिक नहि, बल्कि सामाजिक आ सांस्कृतिक परिवर्तन कैँ सेहो प्रतिबिंबित करैत अछि।

1. नैतिक मूल्यक प्रधानता : सभ कथा-संग्रह मे नैतिक मूल्यक उपस्थिति प्रमुख अछि। "खिस्सा सुनु बाब", "ई भेटल तँ की भेटल" आ "जकर नारी चतुर होड़" मे सत्य, ईमानदारी, परिश्रम आ व्यवहारिक बुद्धिमत्ता जेकाँ तत्व स्पष्ट रुप सँ देखबा मे अबैत अछि।

ई कथा सभ बालक कें केवल कथा नहि सुनबैत अछि, बल्कि जीवन जीबाक तरीका सेहो सिखबैत अछि। एहि दृष्टि सँ ई संग्रह शिक्षात्मक भूमिका निभाबैत अछि।

2. सामाजिक यथार्थक प्रतिबिंब : "अनार", "उड़न छू" आ "फूलक गुलदस्ता" मे आधुनिक समाजक प्रतिबिंब स्पष्ट रुप सँ देखबा मे अबैत अछि। बालक अपन परिवेश सँ जुड़ल प्रश्न करैत अछि, आ कथा ओहि प्रश्न कें संबोधित करैत अछि।

सामाजिक संबंध, पारिवारिक संरचना आ बदलैत जीवन शैली कथा-संग्रह सभ मे प्रमुख विषय बनि क' उपस्थित अछि।

3. बाल मनोविज्ञानक सशक्त प्रस्तुति : सभ कथा-संग्रह मे बाल मनोविज्ञानक सूक्ष्म चित्रण देखबा मे अबैत अछि। बालकक जिज्ञासा, कल्पना, डर, उत्साह आ संवेदना कथा सभ मे सजीव रुप सँ प्रस्तुत अछि।

"उड़न छू" आ "फूलक गुलदस्ता" एहि दृष्टि सँ विशेष उल्लेखनीय अछि, जाहि मे बालकक मानसिक संसार कें गहराई सँ देखाओल गेल अछि।

4. पर्यावरण चेतना : "पिलपिला गाछ" मे पर्यावरण संरक्षणक संदेश प्रमुख रुप सँ उपस्थित अछि। गाछ कें जीवनक आधार रुप मे प्रस्तुत क' बालक कें प्रकृति प्रति संवेदनशील बनाओल गेल अछि। ई प्रवृत्ति आधुनिक समयक आवश्यकता कें दर्शबैत अछि।

5. भाषा-शैलीक सरलता : सभ कथा-संग्रह मे भाषा अत्यंत सरल, सहज आ बोधगम्य अछि। लेखक सभ कठिन शब्दावली सँ बचैत छथि आ बालकक स्तर कें ध्यान मे रखि क' लेखन करैत छथि। ई प्रवृत्ति बाल साहित्य लेल अत्यंत आवश्यक अछि, कारण भाषा जतेक सरल होयत, प्रभाव ओतेक गहिर होयत।

शोधपरक चर्चा : यदि एहि कथा-संग्रह सभ कें समग्र रुप सँ देखल जाए, तँए स्पष्ट होइत अछि जे साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत मैथिली बाल कथा साहित्य केवल साहित्यिक दृष्टि सँ महत्वपूर्ण नहि अछि, बल्कि सामाजिक उपयोगिता सेहो रखैत अछि। एहि कथा सभ मे परंपरा आ आधुनिकता क संतुलन देखबा मे अबैत अछि। एक ओर परंपरागत मूल्य अछि, तँ दोसर ओर आधुनिक जीवनक प्रश्न सेहो उपस्थित अछि।

एहि प्रकार ई कथा-संग्रह सभ मैथिली बाल साहित्य कें एक व्यापक दिशा प्रदान करैत अछि।

निष्कर्ष : उपरोक्त अध्ययन सँ स्पष्ट होइत अछि जे साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत मैथिली बाल कथा संग्रह सभ विषयवस्तु, भाषा, शिल्प आ मनोवैज्ञानिक प्रस्तुति क दृष्टि सँ अत्यंत समृद्ध अछि। ई कथा सभ बालक कें केवल मनोरंजन नहि करैत अछि, बल्कि ओकर नैतिक, सामाजिक आ मानसिक विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाबैत अछि। तँए ई कृतिसभ मैथिली बाल साहित्य क आधार स्तंभ मानल जा सकैत अछि।

भविष्य मे एहि क्षेत्र मे आओर विस्तृत शोध क आवश्यकता अछि, जाहि सँ मैथिली बाल साहित्य कें राष्ट्रीय आ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित कएल जा सकय।

संदर्भ सूची :

1. दुर्गा नाथ झा 'श्रीश' – मैथिली साहित्यक इतिहास
2. देवशंकर नवीन – मैथिली कथा यात्रा
3. साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत विभिन्न मैथिली बाल कथा संग्रहसभ
4. संबंधित शोध-पत्र, पत्र-पत्रिका आ आलोचनात्मक ग्रंथ प्रभृति

•